प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

एक दशक आगे की सोच के साथ बनानी होगी प्रसार योजना-डा. तेज प्रताप

पंतनगर। 03 अगस्त 2019। पंतनगर विश्वविद्यालय में जोन-1 के कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन आज प्रौद्योगिक महाविद्यालय के सभागार में हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पंतनगर विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. तेज प्रताप, थे। शेर-ए-कश्मीर विश्वविद्यालय, जम्मू, के कुलपति, डा. के.एस. रिसाम; वी.सी.एस.जी. औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, भरसार, के कुलपति, डा. ए.के. कर्नाटक; भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के लुधियाना स्थित कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी) के निदेशक, डा. राजवीर सिंह, पंतनगर विश्वविद्यालय के निदेशक शोध, डा. एस.एन. तिवारी, एवं निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. पी.एन. सिंह तथा अटारी के प्रधान वैज्ञानिक, डा. राजेश के. राणा, भी उद्घाटन सत्र में मंचासीन थे।

डा. तेज प्रताप ने अपने मुख्य अतिथि के संबोधन में उपस्थित कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रभारी अधिकारियों का मार्ग दर्शन करते हुए कहा कि हमें 10 से 15 साल आगे की योजना बनाकर उसके अनुसार कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि नयी तकनीकों को जानने के लिए प्रसार वैज्ञानिकों को चीन, ताईवान इत्यादि देशों में प्रशिक्षण व भ्रमण कराकर वहां विकसित उन तकनीकों को अपने क्षेत्रों की आवश्यकता के अनुरूप अपनाने हेतु प्रचार प्रसार की योजना बनानी चाहिए। उन्होंने कहा कि किसानों की संतुलित जीविका के लिए आय सुरक्षा दिया जाना आवश्यक है। इसके लिए उन्हें क्षेत्रीय वातावरण के अनुरूप तकनीकी एवं फसलों को लगाना होगा। डा. प्रताप ने बताया कि विश्वविद्यालय और कृषि विज्ञान केन्द्रों के बीच का समांजस्य एक कमजोर कड़ी है इस पर भी ध्यान देनी की जरूरत है। उन्होंने कहा कि पहाड़ के किसानों का रूझान खेती की तरफ तभी होगा जब उनकी आय दोगुनी नही बल्कि पांच गुनी होगी।

डा. के.एस. रिसाम ने अपने उद्बोधन में कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा तकनीक का मूल्यांकन सुदृढ़ तरीके से किया जाता है, लेकिन तकनीकों परिष्करण किये जाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हमें ऐसे तकनीकों को इज़ाद करना होगा जो जोन-1 के सभी क्षेत्रों के लिए स्वीकार्य हो, जिससे किसानों की उत्पादकता और उत्पादन में बढ़ोत्तरी हो। डा. रिसाम ने कहा कि किसानों की आय केवल खाद्यान्न फसलों से दोगुनी नहीं हो सकती, इसके लिए औद्यानिक फसलों को बढ़ावा देने की जरूरत है। साथ ही तकनीकों का समावेश करने हेतु लागत को कम करने के लिए केन्द्र स्तर पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन की सहायता लिया जाना होगा। उन्होंने कहा कि वर्तमान में सभी स्तर पर कृषि विज्ञान केन्द्रों के महत्व को समझा जा रहा है, जिससे इन केन्द्रों की जिम्मेदारियों में भी बढ़ोत्तरी हुयी है। डा. राजवीर सिंह ने इस कार्यशाला की रूप-रेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्र भारत की कृषि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं और हमें इन केन्द्रों को भविष्य में अधिक प्रभावशाली एवं किसानों के लिए अधिक सक्रिय बनाने की योजना को क्रियांवित करना होगा। डा. डा. ए.के. कर्नाटक ने बताया कि शिक्षण, शोध और प्रसार आपस में एक-दूसरे के पूरक है। उन्होंने कहा कि अगर शोध का प्रसार समय पर नही होगा तो यह सिर्फ कागजों तक ही सीमित रह जायेंगे। डा. कर्नाटक ने कहा कि जोन-1 में आने वाले कृषि विज्ञान के वैज्ञानिक विषम परिस्थियों में भी बेहतर काम कर रहे हैं। डा. एस.एन. तिवारी ने कहा कि अटारी जोन-1 की सक्रियता सभी जोनों से अधिक है और जोन-1 के सभी वैज्ञानिकों ने अपनी मेहनत, लगन और प्रसार से किसानों तक उनकी आवश्यकता की जानकारी उन तक समय से पहुंचाई है।

इससे पूर्व डा. पी.एन. सिंह ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए पंतनगर विश्वविद्यालय के प्रसार तंत्र एवं इसके कार्यों का संक्षिप्त में वर्णन किया। इस अवसर पर मंचासीन अतिथियों द्वारा विभिन्न साहित्यों का विमोचन किया गया। अतिथियों को शाल ओढ़ाकर व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित भी किया गया। कार्यशाला से पूर्व अतिथियों द्वारा कृषक भवन एवं प्रशिक्षण केन्द्र पर वृक्षारोपण भी किया गया। अंत में डा. आर.के. राणा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों के साथ-साथ समस्त अधिष्ठाता एवं कृषि महाविद्यालय के समस्त विभागाध्यक्ष उपस्थि थे।

कार्यशाला में उपस्थित प्रसार वैज्ञानिकों को संबोधित करते मुख्य अतिथि, डा. तेज प्रताप।